"कल का डाकू, आज का राजयोगी "

कल का डाकू

विश्व-कल्याण प्रति शुभभावना सहित शिव सन्देश

– बी.के.पंचम सिंह *(पूर्व आत्म समर्पित दस्यु सम्राट)*

हम परमपिता परमात्मा की प्रेरणा से समाज के सभी वर्गों अथवा 6 सौ करोड़ आत्माओं को शुभभावना, शुभ कामनाओं के साथ मैं अपना अनुभव लिख रहा हूँ। मैंने इस शरीर की 80 वर्ष की उम्र में जो अनुभव किया, वह इस प्रकार है –

मैंने इस जीवन में डाकू सत्ता देखी तो राज़ सत्ता भी देखी। चौदह साल डाकू बनकर जीवन बिताया। जंगलों में हमारा 550 डाकूओं का गिरोह था। शासन ने हमको व हमारे गिरोह को मारने या पकड़ने पर सन् 1970 में 2 करोड़ रुपये का इनाम रखा था। डाकू जीवन की बड़ी रहस्मय कहानी है। इस संदर्भ में मेरी एक छोटी-सी पुस्तक भी छपी हुई है। सन् 1972 में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्द्रा गांधी जी के सहयोग से हम लोंगों ने आत्म समर्पण किया था, तब भोपाल (मध्यप्रदेश) के पास खुली जेल में रखा गया था। मुझे 100 मर्डर केस के आरोप में फांसी की सजा हुई थी, लेकिन तुरन्त जयप्रकाश जी की अपील करने पर फांसी की सजा माफ हो गई।

आज का राजयोगी

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के बहन-भाईयों ने शासन से अनुमति लेकर दस्यु सम्राट डाकू पंचम सिंह सहित 550 डाकूओं को 3 वर्ष तक खुली जेल में राजयोग का अभ्यास और आध्यात्मिक ज्ञान से भरपूर किया, जिसका प्रभाव सभी डाकूओं पर इतना पड़ा कि सभी में बहुत सारी अच्छाईयाँ जल्दी से आने लगी। इस परिवर्तन को जब शासन ने देखा तो सरकार ने सभी डाकूओं को छोड़ दिया, जिसे आप एक ऐतहासिक घटना मान सकते हैं। वो दिन मेरे जीवन के लिए एक अलौकिक सुखद व अविस्मरणीय दिन था जब मुझे इस संस्था के संस्थापक **''ब्रह्मा बाबा''** का साक्षात्कार हुआ था। तब से मेरे व्यक्तिगत जीवन में आध्यात्मिक उन्नति होने लगी। ब्रह्मा जी के संदर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता के तीसरे अध्याय में कुछ वर्णन इस प्रकार से है। कल्प के अन्त में प्रजा को रचकर कहा कि तुम वृद्धि को पाओगे, तुम देवताओं की उत्पत्ति करो और देवताएँ तुम्हारी उन्नति करेंगे। इस विद्यालय की मुरली *(ईश्वरीय महावाक्य)* एक संजीवनी बूटी के समान है, जिसको मैं रोज सुनता व पढ़ता हूँ, मनन करता हूँ, इससे अर्न्त आत्मा पवित्र बन जाती है और पूज्यनीय बन जाती है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शिक्षाओं को समाज के सभी वर्गों में पढ़ाया जाये तो मेरा विश्वास है कि निश्चित ही समाज में बहुत बड़ा बदलाव आयेगा।

अत: मेरा आप सभी से विशेष रूप से निवेदन है कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के किसी भी सेवाकेन्द्र पर एक बार अवश्य पधारें। साथ इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा दी गई नि:शुल्क शिक्षाओं को अपने जीवन में लायें तो आपको पता चलेगा कि जीवन में बहुत-सी अच्छाईयाँ आने लगी हैं तथा बुरी आदतें सहज ही विदाई लेने लगी हैं। इसी शुभभावनाओं के साथ ओमशान्ति।